

आरात्रिक पूजा प. — 1

आरात्रिक पूजा प. — 1
1902 I

ASHA ARCHIVES

324
Ārātrika
pūja vidhi

न
 दन ॥ गंगमकुलचाल ॥ लेयवय ॥ खवर, कुलवर, खवर, अ०
 ऊ, अ० याक, क०, यो० सयवय ॥ दीय, थाल आदिने, आगमस
 दन, थवथव थायसवासी ॥ कम्प, थन ॥ गुरुस्य कम्प आका, द
 वसासीवान, यागिनीन, अलि सवने याद थन ॥ गुरुन यउय ॥ व
 ल्कियाय हवक वक काल कमान विष्टि खानखान निरुवन ऊननी
 गुम्बर सयसत्र ॥ १० तम कुक्षार यिवा यिवहु पूर्णय अगवय मत्रा
 यस्या याकु ॥ ॥ अख लुकर सात्रोथ, करवर सुधाविनी । खड्ग
 रमाकार्य, निविद हि कुल रुयिनी ॥ ॥ अ० खलु खलु स० हनम
 रल वन स० रुव । आयु विम माहायान, पीयूष सुमावह ॥ भिव

॥ किनय थन ॥ थवश्थायसने ॥ सववयाय ॥ वरसक ल०
 दनाया कुआव, गुरुन, यागिनी आदिन विसिद्ध ॥ दीः
 शर्क वसम दुर्ग, को० नये लुका गिनी । सह जान दस दं
 ह, विमिने परमा मूर्ति ॥ व० नोर्ववसर्वर्षा, मर्क कवन मूल
 म । कुल सासना सिद्ध थ, अत्र यागु पुगृहर्ता ॥ सर्ववठयव मा
 विद्या, सर्ववठयव मा कला । सर्ववठयव मा णा कि, गृहीगर्को
 लि कीलिक स्वरा ॥ ॥ धृतन नियय राऊ वयाय ॥ यागि
 आदिन सगने दय जाया देह ॥ सुधार्य ॥ अद्यादि मास नद
 ॥ ॥ गुरुन मस्कर ॥ यन्त्रिम मूल न्यास ॥ ऊनयागु अर्थ यागव

जा ॥ रुद्र मुद्रि ॥ आत्मयुजा ॥ आधरुग कयहादि ॥ सिंहास
नाययादकी ॥ वीरप्रतापनाययादकी ॥ ह्रीं स्वाहा वद्वि युतासनाय
यादकी ॥ तवासनाययादकी ॥ अन्न ॥ वन ॥ अत्र विलयनयादकी
॥ श्रीरव ॥ वन्दन त्यादि ॥ सिंधु ॥ डी वील रुस्रयादकी ॥ विलेख
रीमहा वीरत्यादि ॥ माहनि ॥ श्री सर्वजगन्माहनी यादकी ॥ माह
न कामसिद्धि सुहा द्याक कुलन था ॥ अं अं नवकु सो राग्य
माहनंद सि दायकी ॥ ह्रीं यस्मै यवीरं यादकी ॥ यस्मै यवीरं द वणी
॥ यावनीक विमो ॥ न ॥ ममद ॥ ४२० विनासाय गृहान यत्र मम
थरी ॥ खान ॥ ह्रीं नानन्द अरकाययादकी ॥ नानायथा सुगन्ध

नि मालयाक समद्वय ॥ मोरुग्य सिद्धिद रुद्र यथा लाहनम
ह्रीं ॥ वस्तु ॥ नानावस्तु विविदाह्रीं सिद्धयारणे ॥ अरि
ना ॥ देवांग्य ह्रीं व ॥ अं अं सर्वकारुणिक ॥ वृजन ॥
अं वज्र कुडिनी ह्रीं तुलाका क वली ॥ ह्रीं कामिगडा विनी ॥
ह्रीं महाशुक्रका सि ॥ लासास यादकी ॥ अं नमो रुगव नि ह्रीं
कुडि कार्य ह्रीं ह्रीं ध्यान अर्थान अथा रामस्वी ह्रीं ह्रीं किनि
विश्व यादकी ॥ अं नमो रुगवनी ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं अं नमो अथा
रामस्वी ह्रीं ह्रीं किनि ॥ विश्व याद की ॥ अं नमो रुगव नि सिद्धि
ह्रीं ह्रीं ह्रीं कुडिक ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्व गन्धधार अथाम अथा

महा।

मयन॥ धूय दीयने वा द्य॥ अन्न वस दिव्य वसे ४ य कि ४ सम चिः
नी। मया निवेदिनी तुल्य गृहानयेन मध्ये वि॥ नेव द्य गृह्यना
न्य दि रु कि मव च न के न॥ अयस्मति वन न्य दि य व नु व य रा ग
नि॥ जायसा नु॥ प्रन सि न्दु र द कि ला सु ह्य म ह स यु द ल॥ सि
न्य व न न विल यिन पूषा मा ला य रु य वी न व स ना ऊ न पू
य दी य ना मूल मा द क रु ला नि नि अ न्न न न स पू र्ण य नु म लि
ना मि ष मी न यू की । प्र ना नि स र्व र वि ना य वि यु वि ना नि दे वी क जा य
उरु कि दे व ग ल ४ स स र्व । स पू कि ना नि रु ले मि दे ला सै य दा नि ग
म कि म दा रु व नु म न्न ल क रु ल क्षी ॥ नि वि द्यु वी न या नु आ दि

३

रु ३

म ॥ वसा न न । अ म न् य ल ला का नां शि व रु व नु स र्व दां आ सा
ग रु दा नि दा य व स य दे ग ना व नु ला ला स न ल व द्वा वि द्यु
य र उ ४ स क ल य स्वि म ल्ने ह न नि य ल र ॥ रु क्ता म्भ द स
य नु व न मृ ग ह र ल सा य रु ल षू वा ली सा मा व क रू ल म्भ य
ल म नि ग व नी सि धि ल्ने वी स ना थ ॥ या दे वी कृ दि का र्वा क
म क ल स क ल म लु ल ल ल ल वा । क रू यी ल य यी ल य य क
न य द्वा या मि नी वी व द्वा दि वा नी य ल क ल ना थ स ग ल ग
ल य म दा य जा ग दि य ल ४ वि द्या क ल य म क अ रि म न रु
ल दा वा क ल क्षी यु दा ना ॥ सि न्दु य क स द ल व न वा न न ग र

वि ५

३३

काष्ठनायकं शुभं काननमूला माला। काद्याधृताय ययुना नन वि
 न्दुहं काननमूला माला। काद्याधृताय ययुना नन वि
 सुनगलनमिता, नयका की वनिहासा, मरु कया लु माल गः
 तिनललालि, न क व सु रु नीयां, लिंगया ली कया ल, गृणिम
 विविधनी, सुमिता सुयुसुना। एका नी साध कानी, मरुिलखि
 नवर, एयैमाना युसना ॥ ०० ॥ काननी ॥ यामान को ॥ यथैवान
 सुयुहा नानी ॥ अस्मान यन्त्रि मऊ कानन उष माहासाया श्रीकृति काद
 दवे श्रीसिद्धि लक्ष्मी दवे श्रीगुप्त कालिका दवे, अइ नो दी यजा
 मवनयूजा निमिहा धन, यथै ॥ ॥ कुरु लयदाय रुवने ॥

५२

द१
 दिष्टि ॥ ॥ अतः न नय विमृष्ट यथा ॥ अद्वा ददिष्टि ॥ अतः न नय
 सुयुदय ॥ यथा वानयुहा नानी ह्यादि ॥ अतः न नय ॥ निर्वि
 दधुयुयानु ॥ धनयागिनीयूजा ॥ अदव ३ नवासा, श्रीक ८
 नाथ, यागिनी सयाकायाय ॥ मरुधव २ ॥ जायसा नथव २।
 यवे ३ वेलि आसन थव २ मरुन ॥ थव २ मरुल यूजन ॥ अतः
 ॥ अतः यो व २ ॥ ददिष्टि ॥ दवसक, यागिनी सयाक मा ल
 आसन ऊयसा नथव २ रुवा ॥ ॥ अथ निखाना थयूजन ॥
 आसन कयसा दि ॥ अवासाय यादकी, ययुना सा य
 यादकी ॥ अलको व द्या ॥ ॥ अथै ॥ अथै ॥ अथै ॥

वधवारन वं ऊं सवन सव सव ऊं ही स ४ ऊं रुद्र वय ऊं ४
 यादकी ॥ १ ॥ आनन्द गु कि रुर वान न्य वी वाय न य ॥
 यादकी ॥ १ ॥ ऊं ऊं ऊं ऊं मि खा ख रु न्य म हा ह ॥
 रवा य याद की ॥ १ ॥ वलि व ७ या गा ॥
 दि द कि ॥ १ ॥ सव वि वि व स य ॥ १ ॥ सि न्द्र व न्द्र न विल
 यिन ॥ १ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥
 २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥
 ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
 ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥
 ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

गन गन गन वि वि ॥ दवा र्वन ॥ स्या र्व ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥
 २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥
 ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
 ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥
 ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

सुप्रसादवन्ध्यागिनीकृतयाला आरुप्रसादममददिवस
 वसिष्ठि ॥ आरुप्रसादविमलखल ॥ किदीय प्रवीधयसारु
 वनधुलाया आनाधिर्नधिविन्ध्यानिर्ण कवातु मर्किरुगः
 वानकूल ॥ आरुआरुधय ॥ समनर्ण ॥ ॥ नगावन्धुज
 नयानवर्न ॥ रुनवर्लिनरुय ॥ होरआरुवननरुय ॥ गूद
 वानआरुवनकायाय ॥ गुरुनम कारुका ॥ आसयाय ॥ जल
 वागुअर्थवागुयूजा ॥ रुनगुदि आनयूजा ॥ नगायववर्लिंद
 द्यातु ॥ मयना मययादकी ॥ आदीकूलयुगवदुकनाथाययाद
 की ॥ दवीयुगवदुकनाथकयिरेऊना होरगासुनगिनगुकालो

अ वाद ३

मुखअवतन २३ दहि रुगवानमलुलमधयथायनयन
 नानावलिगुद २ लाहादाधवदेधमधदुदुहाहा ॥ ॥
 काकगुवालाययादकी ॥ ॐ हेवका नाधिवनयेथानामुजः
 वनर २ वदुदुज गिनगुकाद्येखदुगियगुयागिमहाकवा
 ला रुवण विद्युलाटिसमयुलाय ॐ हेवरुगवानरुनववयः
 लयथावानयन नानावलिगुद २ मेमविद्याकादनाडाडादु
 दु ४ रुदुहाहा ॥ ॥ थनामाययादकी ॥ याथानिनीथाया
 दकी ॥ थयेकविन्ध्यागिनीनिखवरीकुरुजी सरुजी यागजा
 गकुजा कूलजा संधारुजा थकविन्ध्यागिनीनी खवरीखव

[illegible]

दयान ॥ ३ ॥ नमो म हा या नु यू ऊ न ॥ आ धा व श क य ह्या दि ट ॥
नद ये वि पूर्व व न आ धा ना दि व कान ॥ ३ ॥ आ धा व व क्रा प्रा य पा
द का ॥ ३ ॥ स्वा धि न व क्रा प्रा य पा द का ॥ ३ ॥ म धि यूर व क्रा प्रा
य पा द का ॥ ३ ॥ अ नारु न व क्रा प्रा य पा द का द्वा वि षु द्वि व
क्रा प्रा सै ना य पा द का ॥ ३ ॥ अ क्र आ रू व क्रा प्रा य पा द का ॥ ॥ नद
य वि अ य ना य व व क्रा नु या नि न स व क्रा म लु ल नि लि क्त ॥
३ ॥ नि व ऊ न क म ला प्रा य पा द का ॥ मा हा या नु प्रा य पा द का
॥ व ण् लो न सै यूर ॥ यं धू मा धि क ला य न म ॥ वं ड व्वा क ला
य न म ॥ लं ड लि न क ला य न म ॥ वं डो लि न क ला य न म ॥ ॥

मा लिखा ॥ अं अमृता कलाय नमः ॥ ओं मान न्दा कलाय नमः ॥
 ॐ यू वा कलाय नमः ॥ ॐ तु कलाय नमः ॥ ॐ यू लि कला
 य नमः ॥ ॐ ब्रह्म कलाय नमः ॥ ॐ वृहत् कलाय नमः ॥ ॐ अग्नि
 न्दा कलाय नमः ॥ ॐ रुद्र कलाय नमः ॥ ॐ काश्यप कलाय नमः ॥ ॐ
 आत्मा कलाय नमः ॥ ॐ प्रियं कलाय नमः ॥ ॐ प्रियं कलाय नमः
 ॥ ॐ अर्चनं गदा कलाय नमः ॥ ॐ यू वा कलाय नमः ॥ ॐ ४ यू
 ल्मा मृता कलाय नमः ॥ ॐ सामं मृता कलाय नमः ॥ ॐ सामं मृता कलाय नमः
 ॥ ॐ निषादं मृता ॥ ॥ ॐ नय द्या मृता य वाद का ॥ ॐ नय द्या
 मृता य वाद का ॥ ॐ नय ॥ ॐ लाक्षा वसु निरुद्धा ॥ ॐ नय द्या मृता

नन। यो वनाग्नं नृवाङ्गी त्रिनंता दिव्यं नृविणी। मन्दिनीं वनं नृवा
 अष्टाष्टं नृवाङ्गी रवेन्द्रिणी लवङ्गी दिवि मं मृता
 रुथा ॥ गदाय द्य वनं यो नृवाङ्गी सदा रुद्र विना त्रिनंता नृवाङ्गी
 यो नृवाङ्गी यो नृवाङ्गी यो नृवाङ्गी ॥ नीला लवङ्गी रुद्र विन्दु वामं रु
 रुद्र विना ॥ दिव्यं नृवाङ्गी नृवाङ्गी रुद्र विना ॥ ॐ नृवाङ्गी
 यो नृवाङ्गी नृवाङ्गी यो नृवाङ्गी यो नृवाङ्गी ॥ ॐ नृवाङ्गी
 ॐ नृवाङ्गी ॥ ॐ नृवाङ्गी ॥ ॐ नृवाङ्गी ॥ ॐ नृवाङ्गी ॥ ॐ नृवाङ्गी
 ॐ नृवाङ्गी ॥ ॐ नृवाङ्गी ॥ ॐ नृवाङ्गी ॥ ॐ नृवाङ्गी ॥ ॐ नृवाङ्गी

यज्ञः

यह ॥ प्रवृत्ति सिद्धि करी दही वा गुं मं हा रु ल ॥ ००० नि धानु य धान
म ॥ अ धान वं कु वृत्ति ॥ वं कु सक्ता व ॥ द्वाद श्म द्वा ॥ वं सिद्धाय
या द द्वय या द की ॥ एका म द्वा य जानु द्वय या द की ॥ त्रि विंश नाना
ये उ वृ द्वय या द की ॥ त्रि लक्ष्मी शु क या द की ॥ म् दी क ये ना रूपा
द की ॥ त्रि मा लिनी ह दय या द की ॥ त्रि निखार्य क ॥ ००० या द की ॥
ह व म् म र्खा य म् र्ख या द की ॥ त्रि ना सा म् नार्य ना सा य न द्वय या दः
की ॥ त्रि क ठ का र्य क ॥ द्वय या द की ॥ त्रि रु वि क णि अ द्वा य या द की
॥ ००० नि वृत्ति या द की ॥ ००० नि द्वाद श्म द्वा ना स ॥ ॥ त्रि स व र्णाः
ना य ह द या य या द की ॥ त्रि अ मृ त न का मा लिनी रु वि नि व र्णा

क्र ७

हा ॥ त्रि अ मृ त व द व द नी अ ना दि वा ध नी नि खार्य वी ष ट् ॥ त्रि
व जि नी वं कु ध ना य स म नु क व ना य द्वा ॥ त्रि ना सा अ नू क ण क
स रु षु न का मि क वं कु या य व व ट् ॥ त्रि न म नु वि ल ४ अ न न ण
कि ॥ त्रि द्वा द श्म द्वा य ना र्थी य स रु म् द्वा य द्वा द श्म द्वा ॥ ०००
नि वृत्ति ना स ॥ ॥ ७ व ल क स रु व उ डा कि नी ॥ अ न न हा
क रु ग म क म मि नी अ न न हा क अ मृ त र्वा वि ना अ न नाः
न द द व अ न ना म्वा अ न न लक्ष्मी का टि सिद्धि अ न न लक्ष्मी का
टि या नि नी या द की ॥ स व र्णा वं कु य द्वा द श्म द्वा न व ॥ अ मृ त
म हा या रु रु हा वि का र्य या द की ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ महायात्रा रुद्राविकाये यादकी ॥ ध्वजप्रिया ॐ
 लि ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वलि, सकारन आवाक ॥ यानि
 मेडा ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ काद्य विद्यालि यूष्, यनममृनमय
 रकृति ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वक्रा लुखलु सैरुना, वरु निअ
 रुत्रिर्ग, ह्यवा ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ साधु विष्टि नृष्टि नृया सकल सुव
 गण ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ सो राग्या दिवाहका, मेरि मनवरदा
 भाद लक्ष्मी सदाना ॥ माहायात्रा युजाथर ॥ ॥ इवरयूजनी ॥
 विष्टि दूवका ननु, खचरी सुन धवना ॥ धूमवर्ण महागर्ज
 रकृम ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ विष्टि दूवका साय यादकी ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सिद्धिदूवकाय यादकी ॥ ध्यान ॥ नीलीसुगमनर्नदव, वरुर्वाः
 द्रुप्रिलारन ॥ प्रिष्टुली जाय मालाके, विष्टि मिष्टुयनरुणा ॥
 खलाग्य रसमानरुहा, विष्टि दिवक सैरिना ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 वी लक्ष्मी सो राग्या दायकी ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 धि सासी सुमो विष्टि दूवका किनी युष्टुगयनी खड्गी सोनन
 दवयादकी ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वरुर्वा य सस इन आनिष्मानु सु
 आरुविज्ञान ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ दूष्टुर्वा ली सैनमासु ॥ गूगनल
 लोक रागगर्ग ममिनी गगनल लोक अमृत सैवामि ॥ गग
 ननन्ददव, गगनल सा वरु ४ वरु लक्ष्मी कोटि सिद्धि, वरु

सुलङ्ककाटियागिनीयादकी ॥ आवाक सर्वदा रुनीमूडा ॥
मुं वलिगृह २ खाहा ॥ काउ ॥ खवर सिद्धिदेरुड, सर्वस्यक्ति
दायक ॥ माहलका सदागुण, निवर्त्यनमासुन ॥ ॥ अथ
हवरवृजन ॥ अनाहन नैमर्षि व, हवरवृड देवना ॥ रकवर्ण
महागुड, कृणुलीनमासुन ॥ अनाहन वक्रा माययादकी
अत्रेमा महाकुरुवाय यादकी ॥ धान ॥ यीनवर्ण निरुद्ध व, वना
हस्या ॥ प्रिलावनी ॥ वतुतुङ्ग युक्त कादी, कहुयात्र धरमृन ॥
हवरा ॥ सुस्तिगाधर, व्यायिन निरिलेन ॥ विनयहवर
दर, दाविड विवद्यानन ॥ प्रियाऊलि ॥ अत्रे धार, अथाव अ

आवामुखीवद्वरुयाथे सुमन्त्राधिकं कौकुं कौ अनाहन काकि
नीय गुणयनी विष्मनन्द देवयादकी ॥ मि ॥ खासवर म
हं कहु सानन्द सयुन ॥ कालिमनुनानील, कृणुलीनमा
सुन ॥ सुसह्यलाकरागगद, गमिनी सत्यलाके, अमृगसंवावि
नि, मलानन्द देव मलाम्या, अषुलङ्ककाटि सिद्धि, अषुलेदुया
गिनीयादकी ॥ आवाक ॥ अत्रे सर्वविद्रावणा मूडादला ॥ मुं वलि
गृह २ खाहा ॥ काउ ॥ हवरवृड वनी सर्व, यविर्गदह ॥ धन ॥ ह
वि स्यक्ति दालका, वक्रवर्त्यनमासुन ॥ ॥ अथ अलववृज
न ॥ मणिपूरकवायया, अलवव विष्मदेवना ॥ सामवर्ण महान

ऊ वन्दु मण्डल यूजन ॥ मनियूरक वक्राशाय यादका ॥ ॐ नमो
महो जवरनोय यादका ॥ ध्यान ॥ कन्दर्प हिमसंकाशं मीनं
वक्राश्रितं यमकं ॥ निहल मणिवक्रं ॥ लख यात्रु वृत्तं मृग ॥ म
णियूरक वक्राश्रितं मकरासनसंस्थितं ॥ ध्यात्वा जलचरं देवं हृदि
रागसुखं प्रियं ॥ ध्यानयुष्मानमः ॥ ॐ उं ऊं ईं वं वनं निखं व
ध्याधि लाली लं लं मणियूरक साकिनीय महोयना मण्डल सा
नन्ददेव यादका ॥ वक्र मण्डलसंयुक्तं वक्रकृत्ति युक्तिस्त्रि
वक्रकाशानन्दानां वक्राश्रितं लीनं निमग्नं ॥ ॐ नमो नागलाक
रागमङ्गलमिनी, नागवाकजमृगसंनिधिनागानन्ददेवनाम

ध्यात्वा विलङ्घकाटि सिद्धिं दत्ता विलङ्घकाटि यागिनी यादका
॥ ओम् नमः ॥ क्रीं सर्वाकर्षणामुद्रादङ्गय ॥ ब्रुवलि गृह २ स्यात् ॥
लाङ्ग ॥ समुद्ररुवसंज्ञा यविष्टयायनामने ॥ सिद्धिसौभाग्यद
रुद्र विष्णुवृत्तं नमो नमः ॥ अथ सुखयूजनं ॥ ॐ नमो स्वाधिसु
नं वं सुखयूत्रं ददवना ॥ यानवर्धनं मरुतजं वृद्धं मण्डल यूजनं
॥ ध्याधि लु नवक्राशाय नमः ॥ ॐ नमो महासुखरमूरुय यादका
॥ ध्यान ॥ वक्रवर्धनं मरुतजं सावित्री वक्राश्रितं लावनी ॥ खड्गव
क्राश्रितं मकराश्रितं मकराश्रितं मकराश्रितं ॥ सुखसुखरमूरुय नमः
नमो नमः ॥ धिया ऊं लि ॥ ॐ नमो कृत्तिकार्यकलदायार्थं

हूँ यदाधि नौ नौ हूँ माँ स्वाधि शान राकिनी यंधि पूरा अनू गृहा
सान नंदव वादकी ॥ ॐ आजयुक्त दि संयुक्त मिता यवादि वृत्ति
नौ। उति बद्ध विनिकारै कृष्ण लीन नमास्तु नौ ॥ ॐ हूँ वन्नयेवन
लोक हा गगद्गम मिनी यवन लोक अमृत स वा विना यवनान नंद
दव यवनाम्ना धातु लक्ष्मी काटि सिद्धि धातु लक्ष्मी काठिया मिनी
यादकी ॥ आवाह ॥ हूँ सर्ववत्समूदाद नय ॥ हूँ वलि गृह्ण ॥ स्वाहा ॥
स्तु ॥ सख री सख री या नि वल वीर्य विवर्धन । रुग्ण भाद्र स
दालक्ष्मी रुद्र रूय नमास्तु ॥ ॥ अथ सर्ववत्समूदाद नय ॥ आवाह
मशिकाने नु सर्ववत्समूदाद नय । सर्ववत्समूदाद नय कृष्ण ली

न नमास्तु ॥ आवाह उक्ता प्राय यादकी ॥ ॐ हूँ सर्ववत्समूदाद
नय वादकी ॥ ध्यान ॥ स्वामवत्समूदाद नय को स वदु वा हूँ कृष्ण लीन
नौ। उत्य लीय नमस्तु वदु महाया उक्त वदु ॥ सा हूँ देवी महा
लक्ष्मी धन वाणिज्य विक्कि नौ। ध्यायत्समूदाद नय सर्ववत्समूदाद
दायकी ॥ ध्यान वत्समूदाद नय ॥ ॐ नमो रुग्ण वदु लक्ष्मी मलायिका हूँ
उवनाधि जौं जौं हूँ आवाह उक्ता राकिनी यमन पूरा मिता नंदव
वादकी ॥ वदु लक्ष्मी वीर्य की वदु वदु लक्ष्मी वीर्य की वदु सर्वदीपा
वलो ककु कृष्ण लीन नमास्तु ॥ ॐ नमस्तु जला के हा गग
द्गम मिनी लक्ष्मी अमृत स वा विना स्वान नंदव लक्ष्मी

काठ॥ नमस्तु कालिकादेवी, सुखानिर्वाणदायक। वाधि ॐ
करुणधारि, कालमृत्यु रुपाय ह॥ आयुर्वर्धनी राग्य, लक्ष्मी
सुपुददायक, कालिमर्त्य ननालीन, ओनन्द वरुमाष्टनी ॥ ॥
पायीयूं यूं ललना कलाय, यैक को लीसानन्द देव यादकी ॥ म
हापादुस वै स्वाय ॥ ॥ अथ अष्टु जयुजन ॥ अष्टु जयक
देवी, हृन् यैक यूर्ध्वकृति, काद्यविद्यालियूर्ध्वया, सर्वभय
विभावनी ॥ निवर्जने कमला माययादकी ॥ ध्यान ॥ वन्द्य काटि
महागजा त्रिभुवार बहुतुज, यूर्ध्वया हृन् देवी वरदा कमला
रुपा। वस्तु लका वदवा ॥ ॥ मेराग्य सिद्धि कामदो, नीकाम ॥

नकादेवी, उद्भवा किनमातुर्ग ॥ ध्यान पृथानम ॥ त्रिया जैरलि ३
॥ ॥ ॥ सुखाय कामभाट कादेवी यादकी ॥ नत्मादावाति किमने
अष्टु वै रुवर, सुमिती, अष्टा कृकीतुकदन कुलुली ननमातुर्ग ॥
जुवु अ धारद्रो ह्म आत्मनसाय क्रियाण कि वनय निवान वैष्टि
कादेवी यादकी ॥ आवाह ॥ मूडा ॥ सुवलिगुद्र २ खाहा ॥ काठ ॥
अष्टु जै कामसादेवी, सुवस्तु रुमका नकी ॥ वाग ॐ करुया दीनी
सुवसिद्धिपुदायका ॥ स्वतजवानम ॥ ॥ अष्टु याक युजन ॥ तु
योनीना सनाय यादकी ॥ ध्यान ॥ सूर्यकाटियुकी काते, यंगहृन्
त्रिलावनी ॥ विन्द्यातु मृतायूर्ध्व, उल्लववदारुय ॥ नानाल

का
कालरु वाङ्मा ॥ ६० ॥ मासु सिद्धि दा । नानु ज्ञान की दही । विष्णु
॥ कि नमास्तु ॥ ॥ ध्यान पूष्यनस ॥ त्रिया ऊँ लि ॥ ३१ ॥ यां ननावा
य रजसा ट को दही याद की ॥ ३३ ॥ अ उ म का न रू न ॥ ३४ ॥ य इ का
सु चि न । मनु सिद्धि स सो र्वा न । कु ली न नमास्तु ॥ ३५ ॥ य
र म ध्यान दू धी रा म रू री म रू य नी व म २ यिव २ रू रू १ दौ दू रू
दू दू दू रू रू दू दू दू रू दू विद्या न ता धिय न य रू न न कि य
रा य ना य नि र्वाण का लि को दही याद की ॥ आ व दू या नि मू डा द
नी य न ॥ व लि ॥ वू व लि गू दू २ सा हा ॥ ३६ ॥ ॥ व न जी रा म सी द
वी । ना न स य लि ॥ दा य नी । सर्व विद्यु विना न्म य । सर्व न्म य वि

मा र ना य ॥ ॥ या क ऊ या क व न य ऊ न ॥ व दू म लु ला स ना य
या द की ॥ ध्यान ॥ काला शि न ऊ सी का स । द न व कू रु जा द न । का
य वि द्या लि स पू रू न । य वि जा न व न रु य । सर्व नृ न्म र व न्म य स
व स य लि दो य रू । या का म सा न की दही । रू दू न कि नमास्तु ॥
त्रिया ऊँ लि ॥ ३७ ॥ यां ना नो म सा न की दही याद की ॥ व नू ४ यी ० रु
रू द न । डा ति या नृ ज वू र न्म र ल था । का म रू य नृ रु द न । कु ली
न नमास्तु ॥ ३८ ॥ नि वे रू ला धि का र वू रू नृ न कि य रा य ना य
नि र्वाण सु द ३ वू री दही याद की ॥ आ व दू म हा मू डा द ॥ ३९ ॥
व लि । वू व लि गू दू २ सा हा ॥ ४० ॥ या क ऊ ना म सी दही । सर्व का

[illegible]

二

[illegible]

क्रीडाया रवा ठरयुव । ननाय र्व महादवी, दिवा कन्यामनन
 म ॥ लाका वस नि रुदवी, यद्य रागसमयुक्ता । अष्टाद गुरु
 जादवी, नन्न लका नरु विना ॥ सोम्य नृपधवीदवी, प्रिनग
 नवयोवना । खड्ग लूल वडु लुव, तिष्ठि मूडु नकथा ।
 गदाय द्यध रियातु, दक्षिण वविना किन । रुतकैक गाय
 ॥ नृमृग ख द्वा म् कुरुया ॥ नीला लल रुय विन्दु, वामहस्त वि
 धाविणी, दिवा रन्न रु नाठाया, रुमा रु रन्न रु विना । सुनय
 द्यासना सोन, वधय द्यासन किन, अर्वरूप महादवी, वावुणा
 दिवा रूयिणी ॥ ॐ नमो नमः ॥ अष्टावाष्ट प्रिया ऊरुति

३॥ ॐ नमो श्री कलकुरुहा विनाय अलिमूरुय यादका
 ॥ ॐ नमो ॥ यासा का माडु धन, प्रवनि यनिकला, वृद्ध नि
 वी जव वृद्ध, रक्त सिद्ध रव धन, यनममृगमया, सर्वदवपि
 यर्विष्टया कुदवदवी, सुन्न रन्न मिना, नाखिता सर्वदव, सा
 लक्ष्मी यद्रुहा, युगम निगिरसा, यातु वष्टा कुरु ॥ अ
 खलु कलसा नील्यथादि ॥ धुन रुतुया ॥ ॥ वनी सया गिनी
 वलि विय ॥ दीयद्व वृद्ध रस ॥ ॥ नव प्रयवलि गृद्धर
 लाहा ॥ मीय णाय नमः ४ वलि गृद्धर लाहा ॥ रुम हा ना सायन
 म ४ वलि गृद्धर लाहा ॥ नमः सायन म ४ वलि गृद्धर लाहा

वं वक्र मुखाय नमः वलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ निर्विवालाय नमः
वलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ कुं नवहर्षे नमः वलिगृह्ण २ स्वाहा ॥
कौसाम्बाय नमः वलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ कौपुथमाय नमः व
लिगृह्ण २ स्वाहा ॥ दिथाय नमः वलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ कौ
सामाय नमः वलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ येरुमाय नमः वलिगृह्ण
२ स्वाहा ॥ कामलाय नमः वलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ दुर्जया
य नमः वलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ दुर्जयाय नमः वलिगृह्ण २
स्वाहा ॥ यो अजिमाय नमः वलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ वै सहाविलो
नमः वलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ अं विकटाय नमः वलिगृह्ण २

स्वाहा ॥ यो जागहाविलो नमः वलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ वै न
कुविलो नमः वलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ मंस्कृववले नमः वलि
गृह्ण २ स्वाहा ॥ विं पृथ्व्याय नमः वलिगृह्ण २ स्वाहा
॥ हौ अर्पनाय नमः वलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ हौ सहाविलो न
मः वलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ किं रुद्राय नमः वलिगृह्ण २ स्वाहा
॥ निं रुद्राय नमः वलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ किं रुद्राय नमः वलि
गृह्ण २ स्वाहा ॥ निं रुद्राय नमः वलिगृह्ण २ स्वाहा ॥
विं रुद्राय नमः वलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ रुद्राय नमः वलि
गृह्ण २ स्वाहा ॥ ३३ ॥ पूवादिनी नमः वलि

साहा॥पूर्व॥ ॥ॐॐॐॐ श्रीनरुहेनवाय माहृष्वरीणकिः
सहिनाय वलिगृद्र २ साहा॥ आग्रय॥ ॥ॐॐॐॐ श्रीवज्रुहे
नवाय कोमादीणकि सहिनाय वलिगृद्र २ साहा॥ दक्षिण॥
॥ ॥ॐॐॐॐ श्रीकाव हेनवाय वेष्कवीणकि सहिनाय वलिगृ
द्र २ साहा॥ नेमस्य॥ ॥ॐॐॐॐ श्रीउन्मरु हेनवाय वानोहि
णकि सहिनाय वलिगृद्र २ साहा॥ वन्धिम॥ ॥ॐॐॐॐ श्री
कयालीहेनवाय ॐॐॐॐ श्रीणकि सहो वलिगृद्र २ साहा॥ वा
युर्व॥ ॥ॐॐॐॐ श्रीरुषण हेनवाय वामपुण्ण कि सहिना
य वलिगृद्र साहा॥ उल्लन॥ ॥ॐॐॐॐ श्रीसहान हेनवा

यमहालक्ष्मीणकि सहिनाय वलिगृद्र २ साहा॥ ॐॐॐॐ श्रीगण
॥पूर्वादिॐॐॐॐ श्रीनार्की अथ उद्ध हनु कादि दण वलि वियम
रु॥१०॥ ॥ॐॐॐॐ श्रीयुवयी अथिकार हनु क हेनवाय
वलिगृद्र २ साहा॥ पूर्व॥ ॥ॐॐॐॐ श्री ॐॐॐॐ श्रीअग्रययी अथिय
कारेगियुनानेकरुहेनवाय वलिगृद्र साहा॥ आग्रय॥ ॥
ॐॐॐॐ श्रीदक्षिणयी अथिकार अग्निवनाल हेनवाय वलि
गृद्र २ साहा॥ दक्षिण॥ ॥ॐॐॐॐ श्रीनथंद धन नेमस्ययी अथि
कारेअग्नि जिह्वा हेनवाय वलिगृद्र २ साहा॥ नेमस्य॥ ॥
ॐॐॐॐ श्रीयैरुवैरुम वरुणीयी अथिकार काला क हेनवाय वलिगृ

दहः सधनं । वन्दु दीय विनि कान् सवो सायविष्ट विनः ॥
 स्वस्ति नमः सुदालङ्गी । स्वस्ति कर्वेनु मङ्गलं दीयदः
 नमास्तुता । सवो सा नन्द कारयन् ॥ दहः कि सर्व यायानि जूल
 श्रीमलना गानी । सर्व नमः कर्वा देवी । विद्या नमः यमावनी ॥
 रुकि मकि पुर्द दीय । वन्दिना गदी यो गिनी ॥ ॥ अथ दीय
 युजन ॥ १ आरु वक्रा प्राय यादका ॥ १ कुरु कला ग्रय यादका
 ॥ ॥ ॥ कनका रका शुक्रा द्विपद गनय ॥ नो गी द्विदवी ति
 माता आवा ववा विह सु मरिमनव वदा गकि सुष्ट सुवाय ।
 जिज्ञासक कलिनी । अलि वि सिन रवाहय यूष्मद्युनन । वि

न्यस्तानवा वि । अयु यवमदा । मय नृपट सदवी ॥ त्रिया
 ऊर्लि ॥ अथाल वक्र वनी निगुर्व ॥ वन्दु विनति समायुक्त
 अग्नि सूर्य कुरु दिने । अष्टा विनति समन्दव । कुरु लीस
 नमास्तुता ॥ हकार । सकावन ॥ त्रिया ऊर्लि ३ ॥ दह दया दानः
 सुयुक्त । वाद्यादि लयाङ्ग ॥ यत्न यहा वयुजा ॥ वलि ॥
 कुरु वलि गृह २ त्याहा ॥ धूय दीय जायस्तु ॥ गृष्टि सहाव
 र । यस्मि मिम विरुवय । सवदवमयव । विसर्व सिद्धि ह
 नी । असुर सूरन व । साधको म । सव कमा पुका वि सकवगु
 नमेय । आदि मय्ये सहा । सिसाव सारहना । मिमिर ह नह

नं, सुजयुयनमामि ॥ पुनि लिङ्गानिदवगा ह्यादि ॥ धुनं
वचयुजा ॥ दीयकुमन ॥ ग्रीसवलन ॥ जानूदु रुम सिन्द
हं, मकिहो वामनयुयं । वामहो सुयवि सिद्धि, दीयं गृह्णुयं
सदा ॥ ददातुदवदवयु, यागिनी गणयुयं । नन दीयं
गृह्णामि, दद्युनं मलनाशन ॥ कालीवन ॥ दीयना आगस
काय ॥ यागिनी आदि न वीरजन विसाह ॥ वाक् ॥ अरु सुजा
वहि सिद्धि, सव रोसा निरामय । समय कालगहन, सव
मायाय विनाशन, अनादि बाध संकास, अज्ञान निमिषाय ह
उकि मकि पुद दीय, रुक यामि सदा दिन ॥ अथ वासाह कल्य

मास नरु ह्यादि ॥ जयमनु ॥ त्रं जलं अमृतर अमृता इवाय
कज ककि धं डाडी दू रुह ह्याहा ॥ दीयरु रुह ॥ मोरुहा
यिहू हावव, उक हा लस ॥ अथ वव । दीयरु रुह ॥ माहून, सव
याय पुण्यमाति ॥ आरु २ धाय ॥ ॥ खवलयाशन ॥ अमः
हा समय सैरुन, दिवा मलाय काद्वी । नवदुवा समायु क
कडि के वनमासुन ॥ कलि के का के जमास, सल हा टिति
हाष्टम । खवनन समा दू ना, खवनन जममवुन ॥ ॥ अ
खवनयासन ॥ अ निर्मात्य निर्मा लंदरु, प्रहृदरु लमध
धन । प्रसादिहन रुकवा, कडि के वनमासुन ॥ अथ ल

बुधिवाग्धन रुद्रकमृगमवव रुद्रवनसमादुगा रु
वनं जन्ममयन ॥ ॥ जलवनप्रानन ॥ जमल्यमीसम
हामात रुद्रकवनवन । वदुकावनवन दिवा कृदि
कवननमामुन ॥ मयकवु यन रव लिय सस्य स म लु क
। जलवनन समादुगा जलवनन जन्ममयन ॥ ॥ सखन
प्रानन ॥ जमल्य विज्ञानेददीय वृक्षसमयववन स न जा
विपिवन लिन कृदि कवननमामुन ॥ लक्ष्म्यादिप्रयायक
वदुलप्रमिणवन । लखवन समादुगा सखन जन्मम
यन ॥ लखवनयन ॥ १ ॥ खवन रुद्रवन जलवन लवन ।

सर्ववनसम । वालवामरुद्रन । वामरुद्र अनामिकादुष
न लिखन । मल्यति का लवाक्यवदुला म लु ल । नदुका
अष्टमृग वदुदुला वदुदुवा ॥ वृक्षन ॥ मल्य सकावादि
रुकावाक्य रुकावादि सकावाक्य ॥ वदुवृ य वृ क व वृ
वदुवृ य वृ क वदु ॥ मल्य अथान ॥ वदु ॥ वनि नि ३ ॥ द
दयादि वदुग ॥ अरुवन वदु वृ ल ॥ गमयति अन ॥
आवाक्यमृदा ॥ वक्ययमाया रुन ॥ वल्य उमर वा द
रुवा ॥ सखवन उमन । दायदकायावकाक ॥ सर्ववननम
का व सखवननमृग । दर्शनवावनन वृ ल्य सखन वा य

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मां ह्यायातुमुमर्षे ॥ देवसकं न त्यजे ॥ विनियु
ता ॥ यासां किं न भखा ह्यादि ॥ या निनी आ दिन स ह्य
व ऊन पाण्डव उ ह्यरु थरु ॥ उमरु ह्यरु व ह्य ॥ ॥ ब्रह्म
सर्गिका ह्यादि ॥ ब्रह्मवाक ॥ स ह्यन स ह्य ॥ विनियु उमर्षे ॥
अथिना सा रु व ह्य ह्यादि ॥ कं व ॥ ह्या स व ह्य स ह्य ॥ नि
कर्म या स ह्य किं रु को खाय ॥ ॥ या विनियुता ॥ विनियु उमर्षे ॥
॥ स ह्य या न क स ह्य रु रु ॥ उ य कि का य ॥ ॥

नमः शिवाय ॥ सवद वनू नि न्व वीति जनेनीं पाहु नु नि न्व
नमः शिवाय ॥ सवद वनू नि न्व वीति जनेनीं पाहु नु नि न्व
या नि न्या वरु का म्य य क वि न वा रु ना पि न्म वा मु हा ।
शु च र व र ख र र ग्य र व र वा र ना व का र व न का रु था
ए क ल वृ क ह्य पि न व न ४ वा प्र वृ थ रु ऊ ॥ श्री म त्त
इ ल वा प्र स वि न व र्म मृ र्म ऊ र्म क र्म मा र्म क र्म न वा

श्री गणेशाय नमः

1902

I

ऊवः कवः दी दिद्याः नानाधिरि। एकिं नृ निजययुर्व
वदिनं सामृहं किं वं नृ कवः, एकिं नृ मृ वमनु नाजसहिर्न
यागुरुऊय वं मं ॥ आकाः दि विरुसि यं वं ऊवः नृ वाम
कं सु दवः, वाउवद वसा सु धा दिम दिनं सानं पुं कय क्राविर्न
। मृ कि ४ वृ मयं पुसत्रवदनं एकिं ४ वृ यं ऊवः वं नृ ४ वृ
मयं य विगु ऊ गती वं यं यं यं यं ॥ नृ क मृ क न नृ क नृ क
लिमल काल नृ हा वं वं, उकि मृ कि पुसत्र एकिं निव

द४ सर्वात्मकं सानं यं । वं ४ वृ नृ द्वा द नृ द नृ क ली :
नृ नृ पुद स नृ वं, यागु नृ व मयं य विगु ऊ गती वं यं यं यं
निन ॥ नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं
नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं
यं यं यं यं यं यं यं यं यं यं यं यं यं यं यं यं यं यं
नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं
यं यं यं यं यं यं यं यं यं यं यं यं यं यं यं यं यं यं
नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं
॥ नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं नृ वं

२ वा व ७ ॥ अहं मग रू. अलियि विनि न सु हू. कां ग या नु दय री
 दवा लु नु नु मू लि. य ल म क ल नु नु. रु व वा म नु मू लि ।
 अस्या यू जा यु स नु. द वि न रु य ह री थो व वा य वि ह कि आ
 य ग्रा क निल क्क. विल रु व रु ऊ री. ॥ नि द य वि द स्या रू
 ॥ ल क्क वृ दि के री स. दा रु य ह री सो रा ग्य मा रु यु द ४. व
 यु वि य ना ग न गु ण क री. स कान स द न. य ७ ॥ अद्या न क री.
 व ल लि नि क री. दा वि दु द ४ र वा य ह. या रू य वि न व रू णी. व गु
 र व. द वा रु ल या य न ॥ ॥ कि द धि कि स न धु न. कि म
 ध ना कि न क द ल्प न कि. य कान वि धन ख लु र व ७ ॥ ना ना

वि वि ण कि. धि क धि क कि क द ली रु ला दि न म हा कि न
 न स व उ ग न. गु ला क्क म पि द ल रु ७ ॥ रु क री क द म री ७ ॥
 वि नी ॥ न व हि न व द रु व र ल न स म म य वि वि क नी य ल क
 द म न ४ ग न क ४ ग न क ४ व स म व स म पि व ४ व लु ऊ री रु व ७ ॥
 के ह री ॥ ॥ अ ना ७ ॥ अ ह द म क ल नु न हि न उ उ म नि न वा
 या य द रु क थ म पि वि रा म य वि व य ४ अ व रू ७ ॥ अ न वी उ म ४
 म हि य य ७ ॥ य व र ४ य वि न ७ ॥ आ व रु न नी न व या दा म रु
 व र्ण ॥ ॥ वि ध र रु न न द वि न वि र ह ना व स न या वि ध र ४
 ७ ॥ क्क वा ल व र व र ग या य ४ अ न म रु. न द न क न वी उ न नी स

कलाद्धा वणि मि व क वृत्ता जायत क वि द पि क मा गान रु व नि ॥

रुक्ता आसन विधि ॥ वृत्तासन दा वि ड ॥ पाषाणासन वा वि धि
छि न ॥ कृष्णसन ऊ स दानि ॥ दा व कासन दा वि ड अ स्नान ॥ यी
थि कासन अ द्वा ग द्वा ॥ कृष्ण जिने स्नान सि दि ॥ वा य व र म
भा क मने सि दि ॥ वल्गुसन वा धि नास ॥ क म्बल सब सि दि ॥
स्नान क म्बल भा क ॥ ॥ पू य वास या ॥ क ॥ ना श क दि ॥
मि रु न रु म व वि ॥ ४ सा सु ड्ड ऊ सा ग नी, मा सी य पु सु न क मा व
व द न, वाली मूनी आ न नी ॥ सा न झी ॥ स ग हि म गृ हे ॥ ली का

धिय न कला धूयार्थ म क र वृत्त न व रि ता वि द्या ध री मा हि
डु ॥ ॥ २ अ द्वा वा रा रु क ल्यो मा स न रु ड्ड ॥ मू व हि व रु
दा व न, वा डि दान स न र वि । वी वा ॥ पा पु न दान न अ र्थ रु रु
ल म्बु र्थ ॥ गृ ड्ड २ म ला वी व अ वि रु ॥ अ स्नान दि वृ वि न । पु रु रु
वृ ड्ड म द हि, सु पु स न म र्ग न सा वा क ॥ पु रु या व ल न या पु सा द न
४ ॥ पु रु य सा द वि र । स म ल वी व रु न न म ल व या दान स
म रु वि धि म नि रु वा ॥ य रु मा न स वि दि ॥ म न्थ यी पु
रु अ म्बु क नी म स म्मा आ रा धा, आ वा या य न वा ला मू रु य रु
द क म्बु य रु पा पु रु य व य रु द रु ॥ क र्म या पु दान या वा क ॥ ॥

वगना. याहु मां वृद्धा कि ॥ १ ॥ याग कि ४ नव काटि रुद तु
 वन. सिनेन थारु रेवी. याग कि नव रुकु मूल. आधर मा. ज्ञ
 कि ना. याग कि ४ नव यो ० मध कल दवी रुथ वलन ॥ याग
 कि नव खलु ममि जि नकला. याहु मवि द्रु ग कि ॥ २ ॥ यादवी
 मान्ने धन ४ गु व नित्य वि क ला गल की मा र दू यि. बुद्धा दि या
 गिम धय कट गु ल निधि. य र्दे उ वा धिका बी. र की गा र क
 वधु. वस नि मु ल गृ हा नाद ग म् र मा दा. सा द वी दि यः
 दू या द द रु म म सु हा. याहु मां विष्णु ग कि ॥ ३ ॥ समा प ॥ ॥

ग ३

१००० षष्ठ का स्याम र का प्रि तु वन जननी. काल धा नी द्दि
 ॥ न नै र व द्दी धि द ॥ सह रु डा. आय धानी धर
 ॥ ज ग न ना व ॥ कु म यु द न रु ना. रु धि ता सर्व काल
 ॥ य ना रू दै सम सा. सु व ग ल न मि ना. याहु मां वा क्कि का स्या ॥
 ॥ ॥ नमः प्रि काय ॥ मार्क ॥ पु य रा ल ॥ ग व र ग ता
 या र ना व दी द ॥ ग नी. व लि स क नी य द दू य ठि ना ला क दू य
 सि डि न. ग नी ना धि क या स द्वा य स म न क रु म या स म् रु न रु
 का ग म् रु र या म नि स र ग ॥ सि डि नि वा मा न र ॥ मा न भ म

ॐ नमः श्रीयशोवन्तये ॥ श्रीगुरुभक्तनमः ॥ अथ ब्राह्मणिकयुगा ॥ पर्यन्तं गवत
वासनयकथाय ॥ कंसया कुरुसुयनयाय अग्निनथान ॥ श्वालासदीपस्वाय हा
मलथकननय ॥ नागियामरुगोत्थं युजायाय यदवसक ऊय स्मरु ॥ ॥ धनलि
यदव्याहवभयकस कुरुदीयनय ॥ धनापगुयुजा ॥ ॥ यकयादालयुजा ॥ युव
॥ ॐ ब्राह्मणकय ॐ न्यादिदशालाकेयालाय ॥ दक्षि ॥ ॐ योथागिनीहुरुकादिद
शयवनाथे ॥ पणि ॥ ॐ कुरुगुयानादिब्रह्मयवनाथे ॥ उरु ॥ ॐ गंगायनय
गुसिनीगदिब्रह्मयवनाथे ॥ धनैवलि ॥ ॥ ॐ न्यादिदशालाकेयालाय ॥ दक्षि
सयन ब्राह्मणवाहनाय सुनाथियनय गङ्गियुक्ताय सांगमयसवाहनाय सवत्रिवा
नायनमः ॥ १ ॥ अग्नि ॥ ॐ ॐ ब्राह्मणयगङ्गिरुसय गङ्गाधियनय कुरुगवाहना

य सांगमय सवाहनाय सयनिवाहनाय २ ॥ २ ॥ दकि ॥ उँ उँ यँ यँ माय दल्लहस
 मरिषवाहनाय थनाधियनय नक्रियकाम सवाहनाय सयनिवाहनाय २ ॥ ३ ॥
 नेम ॥ मँ मँ कँ नेमहाय खज्जहसय यननू ॥ य य काधियनय नक्रियकाम
 सांगमय सयनिवाहनाय २ ॥ ४ ॥ वनू वनू ॥ उँ उँ वँ वँ मय वागहसय कमननू
 य जलाधियनय नक्रियकाम सांगमय सवाहनाय सयनिवाहनाय २ ॥ ५ ॥ वाय वा
 पूजा ॥ नँ नँ वँ वाय वाय धरुहसय वननू वाय वाधियनय नक्रियकाम सांगमय
 सवाहनाय सयनिवाहनाय नम ॥ ६ ॥ कव वनू ॥ उँ उँ कँ कव वाय दल्लहसय मव
 कावू वाय य काधियनय नक्रियकाम सांगमय सवाहनाय सयनिवाहनाय नम ॥ ७ ॥
 ०० नम पूजा ॥ जँ जँ ४ लँ ० नँ म नाय रि ४ ललहसय वृष रु वनू वाय विद्याधियनय नक्रि

वचकदीर्घयूजायाय ॥ न्यासश्चानुयसुनियाय ॥ ऊय १०८ ॥ स्मृ ॥ गत्वमधन ॥
 मयमयययदि धयायक ॥ विसर्जनयाय ॥ स्नानकाकाय ॥ दीपयामाहनीकाय ॥ च
 कयासिधयकाय ॥ कूरु, नकिलवकाय ॥ यगस्नानसम्यनभारुनीदिय ॥ त्रयागमकि
 थात्रयावज्जानीवदिविय ॥ वीजहाऊनयाय ॥ कलखेक्षुय ॥ सादिधाय ॥ कलखेक्षुय
 णखकाय ॥ ॥ ॐ निवेणखकारिक, माधय्या, आचारिकसंक्षययदनिंसमार्क ॥ ॥

१
 १ आचारिकयूजा ॥ यवर्लंग, यगवासन, वकथाय ॥ विन्दु, रिक्का, अष्टयल, यउ
 दान ॥ कंसया, कूरु, स्नानयाय, अग्निधन ॥ श्वालासदीयस्नादवगय ॥ वागिस, मर्जा
 नार्थ, यूजायाय, देवसंके, ऊय, स्मृ ॥ ॥ धनलिकायनिस, दवभनयाव, दधुस

कूरुनय, धयादवभ, दीयनय ॥ धनायागयूजा ॥ यकया दानयूजा ॥ यवस ॥ ॐ
 वावदकाय ॥ ॐ आदिदणलाकवालाय नमः ॥ दक्षिणस ॥ ॐ योथागिनीरुहुकायन
 धवनाथेनमः ॥ यक्षिमस ॥ ॐ दक्षिणयात्रादिजुष्टधवनाथेनमः ॥ उरुनस ॥ ॐ गं
 गद्यनय, अभिगांगदिजुष्टधवनाथेनमः ॥ धननयूजा, वलि ॥ ॥ ॐ लयूजा
 वलि ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ लयवकरुसय नेत्रावनवाहनाय, सनाधियनय, नकियूकाय, सां
 गय, सवारुनाय, सयनिवात्राय नमः ॥ १ ॥ अग्नियूजा ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ नय, नकिरुस
 य, नकाधियनय, कुगवाहनाय, सांगय, सवारुनाय, सयनिवाहनाय नमः ॥ २ ॥
 ॐ ॐ ॐ ॐ यमाय, दक्षरुसय, मरिषवारुनाय, धनाधियनय, नकियूकाय, सांगय, सवा
 रुनाय, सयनिवात्राय नमः ॥ ३ ॥ नेमययूजा ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ नेमयाय, सप्ररुसयधन !

नूराय यक्षधियनय गक्रियूकय सांगय सवारुनाय सयनिवात्राय नमः॥ ४ ॥
 वनूधयूडा॥ ६६ ॥ वनूधयूडा सारुसय कमल नूडा नूडाधियनय गक्रियूकय सांः
 गय सवारुनाय सयनिवात्राय नमः॥ ५ ॥ वायूवदूडा॥ नूनें वौ वायूवाय धरुहः
 सय नून नूडाय याधधियनय गक्रियूकय सांगय सवारुनाय सयनिवात्रा-
 य नमः॥ ६ ॥ कूव नूडा॥ ७ ॥ कूव नूडा यदवह सय मनूक नूडाय यकधिय-
 नय गक्रियूकय सांगय सवारुनाय सयनिवात्राय नमः॥ ८ ॥ ७० गाननूडाः
 ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ गानाय विष्णुलेह सय यवह नूडाय विद्याधियनय गक्रियूकय सांग-
 य सवारुनाय सयनिवात्राय नमः॥ ९ ॥ अथयूडा॥ नूज नूमाय यकह सय कूमात्र-
 णाय सांगधियनय गक्रियूकय सांगय सवारुनाय सयनिवात्राय नमः॥ १० ॥

उदययूडा॥ ११ ॥ उदययूडा यदवह सय हं सवारुनाय आकाशधियनय गक्रियूकय
 सांगय सवारुनाय सयनिवात्राय नमः॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ यनयूडा नूथा लवलिकुया लविय
 ॥ १३ ॥ गिकान समूलन गिया कुलि॥ १४ ॥ कूरुयूडा॥ सर्वग कू सनाय नमः॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥
 कूल कूरुमहा कू नाग्रयाय नमः॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥
 कलागुहा भाहिनीयवदवना अमृभगीय नमः॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥
 नयूधनमः॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
 ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥
 निमूडाकभा॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

को श्री लो कलत्राय यादका ॥३॥ हृदयादिषु गनयुजयत् ॥ सर्वाकर्षणी मूर्धा
 दमयितुं ॥ विन्दुगय ३ ॥ ॥ गता सरवत्रयुजा ॥ आन ॥ नक्तवर्धु महत्साहं योनिः
 वृक्षगिलावर्त ॥ रक्त्तखट्वागहसुख मूकायागधनामय ॥ गयाकुलि ३ ॥ श्री
 वा सरवलाय यादका ॥ षष्ठं गनयुजयत् ॥ सर्ववर्णकत्री मूर्धा दमयितुं ॥ विन्दुगय
 ३ ॥ ॥ गता सर्वत्रयुजयत् ॥ सर्ववर्णमूर्धेयनमः ॥ आन ॥ महामेवकनय
 र्वा यत्रुदवीनरुषित ॥ उत्पलं यद्रक्त्तमूलायागकनय ॥ गयाकुलि ३ ॥
 नेका श्री मूर्धा सर्ववर्णमूर्धेययादका ॥ षष्ठं गनसंघजयत् ॥ सर्वात्मादिमूर्धा दमः
 यत् ॥ विन्दुगय ३ ॥ ॥ गता गिका नसंघजयत् ॥ अष्टमूर्धेयनमः ॥ आ
 न ॥ सामविम्वसंकाणं वक्ष्ये लुप्ये लुयागका ॥ कामनी सातकीयवी वक्ष्ये नकिनः

भासुत ॥ गयाकुलि ॥ त्रैलोक्यो ४ मूर्धा अष्टमूर्धेययादका ॥ षष्ठं गनयुजयत् ॥
 सर्वक्षयामूर्धा दमयितुं ॥ विन्दुगय ३ ॥ ॥ गता वामजुष्टया कयुजा ॥ अष्टः
 याकमूर्धेयनमः ॥ आन ॥ काटिदिवाकलाहार्यं सर्वात्मिमनाहर्त्रं ॥ विन्दुयागसुः
 यापुर्णु नीलात्पलसुगन्धितं ॥ गता जननकीयवि विष्णु नकिनभासुत ॥ गयाकुलि
 ३ ॥ श्री मूर्धा अष्टयाकमूर्धेययादका ॥ षष्ठं गनयुजयत् ॥ सर्ववोक्तमूर्धा दमयितुं ॥ विन्दु
 गय ३ ॥ ॥ गता ददि (क) कयुजा ॥ कंचकमूर्धेयनमः ॥ कालाग्निजसहितं
 यदुवाक् गिलावर्त ॥ कायविद्यायानिजागं विष्णुवक्ष्ययमित ॥ नातालं कालरुषी
 गत्रुदामकिनभासुत ॥ गयाकुलि ३ ॥ श्री मूर्धा कंचकाय यादका ॥ षष्ठं गनयुजयत् ॥
 सर्वविषममूर्धा दमयितुं ॥ विन्दुगय ३ ॥ ॥ गता समयाक्तकयुजा ॥ आधननकय

[illegible]

लयग्रुवयुर्गं गकिं वउरिहउके ॥ त्रिकासक समर्थि नं विद्यथ गणी सुन्दरी सासन
 आलाका मद्रुतासनं ददुभ गमिं यमनं सदा ॥ ॥ तं ग्रां प्रग्नयदीया कुरुद्वानि
 कार्यं कुं की नग्रीयादकां ॥ ग्या अलि ३ ॥ तं की सौं ४ कुं कुं ५ सुं वक्रवक्र उठि या
 नयी १० ग्रायया नाथ लक्ष्मी मरुगिय प्रसुन्द ६ कुं वाद ७ विद्यनं वक्रा लयः
 गकिं ग्रायादकां ३ ॥ दीयऊयययमन ॥ तं विद्य वादवा विद्रु ८ कुं काभग्यविधामरुं
 सौं ४ तन्नाकिन्न ४ प्रवादयातु ॥ १ ॥ मूलमनुनऊययय ॥ ३ ॥ थना गकिं पूजा ॥ ॥
 दीययायवाक ॥ स्वस्ति वाक्यं १० ॥ कालिनी मूर्दी दर्शयतु ॥ श्रु ॥ स्वस्ति विष्णु तत्र
 यंक वृत्तुवन सर्वदवायिऊना सिद्धनयवरुणा सुनमूनि सगना साधकां स
 वकामा ॥ अंग गन्धादि ॥ अस्नन विसर्जन ॥ थसूय पलयावरुमनयाय ॥ समस्त

यजुर्वेदसि, ऊनदवीनवात्मकं यज्ञात्रिकमिदं दीयं, गृहानममसिद्धयन् ॥ ॥
 दीयं रुद्रनयाय ॥ त्रैज्यात्मसंज्ञायादि ॥ अथादिवाक् ॥ शागयायुसवलथ ॥ ग्रामर्कक
 नेत्यादिय ॥ ॥ ॥ स्वयं नयासनयाय ॥ लक्ष्मिस्तुम्भसंभवायादि ॥ यागसवनव ॥ स
 वस्त्राभ्यादिय ॥ ॥ ॥ कुरुनयासनयाय ॥ सर्वज्ञयनयादि ॥ यागसवनव
 मर्द्धमान्यादिय ॥ ॥ ॥ ऊलवलयसनयाय ॥ कालवृथयादिय ॥ ॥ यागसव
 नथ ॥ धरुस्त्रिखिलधवनायादि ॥ ॥ श्रवणयासनयाय ॥ ॥ श्रवणसुगवलयादिय ॥
 न ॥ यागसवलथ ॥ ग्रामर्कगन्धयादिय ॥ ॥ ॥ सर्वयनयासनयाय ॥ उद्यत्य
 लोकात्तानिधयादि ॥ अन्नदयादय ॥ ॥ यागसवलथ ॥ आकाशायादि ॥ ॥
 तमार्कुरुद्राय ॥ मायाकन्दननीयादि ॥ ॥ यागश्रिष्टिकविय ॥ उकार्वायुवीर्ज

ॐ ह्यादियः ० ग ॥ ॥ अलुङ्ककायाव ॥ यी नद्यतादियः ० नद्येक्षयाय ॥ समसुयार्ग
विय ॥ ॥ स्वतङ्ककायाव ॥ अष्टविंशति ह्यादियः ० ग ॥ नद्येक्षयाय ॥ समसुयार्गविय ॥ ॥
कंयुक्तकायाव ॥ अविनाश ह्यादियः ० ग ॥ नद्येक्षयाय ॥ विष्टुष्टुयलयाव समसुयार्ग ०
कादकविद्याव ॥ यययाव ॥ नवयार्गयकायय ॥ ॥ समयान्तककायाव ॥ जयनिका
याय ॥ जयनिकिदद्यायादि ॥ याग अक्षमूर्खकृत्वा ॥ नभावीनराजर्नकायय ॥ ॥
ॐ नि, ये भस्व, कार्तिक, माघ, स्वल्पान्नाशिक विधि समाप्त ॥ ॥ ॥
॥ अनादिद्याव संसाय, क्षक विधि सहनव ॥ नमः श्रीनाथवेद्याय, रुवडोषधधवि
॥ ॥ आयुत्राभागमेधय, कीर्तिलाह ॥ सर्वज्ञय ॥ लक्ष्मीमन्त्रानमायासु, यानुः
मां सर्वदवता ॥ नन्दनु साधका ॥ सर्व, विनश्यतु विदूषका ॥ अतस्तु भर्तुर्वीम

सु प्रसन्नो सु मुनः सदा ॥ नन्दन्नुथा गमिषता ॥ कलधर्मयुक्ता आचार्य सामयिकः ।
॥ रुद्रधर्मयुक्ता ॥ गमवादि आयुवगय ॥ यगय ॥ कुमाय्या धर्मत्रैविनिनियुक्तो
सुरुक्तिः ॥ नन्दन्नुतीतिनियुक्तानि नववयानि नववयानि नववयानि नववयानि नववयानि
ह्यमिचंजनवगामुप्रधानि च ॥ १ ॥ गमक ग्य गमक मत्त साहग ॥ गमक र्सीका ॥ नन्दन्नु
सिद्धगुनवस्तुनकुमोद्या अक्षानुगम समधिभावदुका ॥ कुमाय्य ॥ वथागिनीयव
प्रवीचकुलप्रसूना आचार्यरुमियगथादिउसाधुलाका ॥ नन्दन्नु साधककुलान्व
यदर्गनाथसिंहसनाधविनगमकयगमरुवाय । नन्दन्नु सवकुलधर्मवगा ॥ यत्राय
व्याविः ॥ वयदहदकगमरुवाय ॥ यद्यथा रुतीगकि यदिरुववगसर्न । यद्यवध
ममिचगा नग्यमुगिवद्वयका ॥ याग्यक्रक्रमरुमिकावसनथा नागीव्यासीसि

ना याकार्यागगनामकयनिलयायासीसि नाभापुष्प उक्ता सामिर्मनरुचंग
निलया नि ॥ १ ॥ सवामाग्या सवथात्रियवदुहदुहायवास्तुयनुकोलाचन ॥
यादय ॥ कुलधर्मरुवा ॥ किमिगना याधवनासायगम यानिह्यमुदिनयरागिखिग
ना याभानात्रियसिगा ॥ याथामामत्तमगिला ममया या ॥ सवगम ॥ सवदा गाधवा
॥ कुलमार्गवालनयवा ॥ गमर्किययकूपम ॥ वद्व्याया ॥ वद्व्याया ॥ गुरुवद्वकगम ॥
प्रवादेगुदिया वनालादिवानुदा गुरुवसुमूनय ॥ सिद्धया गुदकाया ॥ रुताः
गंधमाविआधवमविधित ॥ किन्नवायदुमागम आगरेगम ॥ गमवगमया ॥ सूचनव
निक नासु यागपुत्रनसिन्नादहसुखिलधवनायादि ॥ उद्वुद्वु ॥ लुभावादिदि
गगधनलरुतलनिललवा यागालसयसीरुसलिलयवनथायगदुकिगा ॥
। तीर्थया ॥ वययी भदियुगिविनवव ॥ सागथयायसीरु सुयाकाधवधव सुलियि

भिनयनेद्वयदीयादिकन ॥ सत्यं शुद्धं वाक्यवचनं वा, वदागमायागिनी, मन्त्रं
 अथ नवदवतायादिरुपदं वा यमादीरिति ॥ अथ कुर्याद्यदिदं नैरुपनिषत्, लूजाया
 भाषासिध, लूथं वा यिचको लक्ष्मणं चर्म स्यात्संज्ञयः सर्वदा ॥ विवन्तु मागत्रः स
 वाः ॥ विवन्तु कुलसकमाः ॥ विवन्तु हेनवांसर्वे, ममदहवावसि ताः ॥ हयानुमाः
 गत्रः सदाः समुद्राः सगन्धधियाः ॥ यागिनी ॥ द्रुग्यालाध्य, ममदहवावसि ताः
 ॥ गितययनिनयनं वद्वदिस्वसयुतं ॥ कालान्नादिभिवार्कव जगद्याज्ञनह
 यान ॥ ॥ नन्दकुसाक्षककुलान्ये ॥ ॥ ॥ वपुवसुं दानयुक्तं गिरुधायनि
 दृत्तं कषयगाय (भरुं) गगासुर्यगयुक्तं नदयविमिलं कंभवनं कर्षुकाया
 ॥ गन्म (ध्वयं) उनाथं भिवगकनियुतं धायमालिं गनीयं, साधवीकल्यवृक्षः

रिमनववदाकामसिद्धिदया ॥ ६०० निवक्रादात्र ॥ ॥ १ कलंखयुजा ॥ स्नान, शन-
 सिध, ऊऊम, स्नानकुर्या ॥ गुत्रनमस्तु ॥ न्यास ॥ ॐ ह्रियिश्चुमायरुदं ॥ श्रीमार्तं (ग
 ण्धनाय) गुं वा स्या ॥ श्रीमार्तं (गण्धनाय) गऊनी स्या ॥ श्रीमार्तं (गण्धनाय) म (ध्वः
 मा स्या ॥ श्रीमार्तं (गण्धनाय) अनामिका स्या ॥ श्रीमार्तं (गण्धनाय) कनिष्ठा स्या ॥ हि
 विश्चुमायरुदं ॥ ॐ बुध्याय अस्मयुजा असनयुजा ॥ आध्यात्मिक कमलासनाय ॥
 श्रीमार्तं गमसनाय ॥ ॥ ॥ काकाननाकावकनागिन्त्रा, सवासनासिद्धिकर्त्री ग्या,
 मिनकपालकली अकवेदधनां, इव्वात्रध्वलवज्रटादधनां ॥ देवावलसुं गकवा
 गनसुं सागसुमालाकरुयारिन्त्रा ॥ नानाविचित्रा मन्त्ररुषिनासा, वाक्, लयदीवा
 क्तिनकल्यवली ॥ श्री कृति ॥ व्रंदाग्रांशुं श्रीं ॐ श्रीं ॐ श्रीं ॐ सिद्धिमार्तं गण्धनाय ॥ ॐ

[illegible][illegible]

२३ अथ दुर्गनामलिखान इति सूत्रम्

॥ शु र ॥ सी० ५० ॥ ३९ ॥

[illegible]

१७१ का लिका ये न मः ॥ महादवे न वि कृता ॥
 ल क द यं ज प म न क ठ व क ठ वं ॥ १७२ ॥ प म त वं धू क प र्ण मु हाम
 म धू घ त त्वि न क य द म म त म म ली न करे ॥ अदि न य म त त सि द
 र व द वी वि वि म वी वि त प द ॥ म कु म्ब ॥ ॐ वि वि वि वि वि रू प सि दि
 कर क रू ला हा ॥ १॥ ल क द ॥ प व ॥ न ग र म य ल क स कं ज प म न
 प म प ॥ घ त प त क त हाम द म म त ॥ प य रू पं ज न द शी य न प म
 ति न नि विं ह र व न तं च ग्ट क ति न वि द्यः प नि ह य त ॥ म कु म्ब ॥
 कु न म हा सि नि ह स म मि नि की क्री ला हा ॥ त्रि प य म्ब ज प म न ल क
 स र्थ म्ब म न द म म त ॥ घ त क ग उ र ह मः ही म नी वि ति
 त प द ॥ म कु म्ब ॥ ॐ महा ना द ही ग ति डां डां ला हा ॥ क द म्ब

॥ अ ज प म्ब ॥ गी म कु ल क द यं त तः घ त क ग उ र हाम द वी म
 ल ग्य दाय नी त व तू ॥ म कु म्ब ॥ ॐ क्री ज न रं जि क ला हा ॥ वि वा व क
 त स म कु ल क स र्थ ज प क विः म त य गी ह वः प र्ण स घ तः हाम
 मा च न त ग त सि द र व द वी वि म्ब ला का म म मि नी द दू ति म न्द
 न ग उ र स दि द र सा य न ॥ म कु म्ब ॥ ॐ वि म्ब स डां डां क्री र द्ये
 हि ला हा ॥ ल क स र्थ दान ॥ ज प म्ब न त र द य वि त ग उ विः स क्री
 वः मा ल त ॥ प र्ण क त हाम द म म त ॥ म द ना य कि नी ग उ र ग उ ठि
 की च न सा य न य य म्ब रू प द म्ब वि ला यी र व न र म्ब म न्द
 ॐ म द न म द न वि द म्ब नि मा ल य स ग म द हि द हि प्री ला हा ॥
 स द ए वि द य म्ब नी ज प म्ब म्ब न द यं ग य रू र य न री की

न दं नि नि द व स ध क ॥ म क्त ॥ लं से पु नं क्षा र य प डा क्षा र य र ग
 व ति गी ती न स्व न प्रो स्वा हा ॥ स ग ह व र्ति ॥ म न्नी ज प मा स य य
 म न् त ग र्ति क्षा र व दे वी वि क ल वी क्षा य द ॥ लं वि क ल से क्षा र
 क्षा र प्रो स्वा हा ॥ पु न त न वी य धा ॥ लं ह श ग क्क पु न स द नि स्वा हा
 व ज पा ति ग ह म लो ग उ ग्ग रे न धू प य री मो सा लं ग न नी आ
 या ति सा त त श्र द ना द के न धू द या र ॥ मो गा रा जि नी
 रा ध्या वा द व ति य र मा ना ग द सि द्ध द या ति न सा यु न
 द दा ति ॥ य धि र जि नी प्र ग द्ध पु र्व व र्क त व र्क द दा ति ॥
 य र रा यी र व ति ग त न व य र वी स द र प ति ॥ व र य नी

या न य रा ह न य नी य मे ध न कि य ग त्र न्ध धा न ग्ध ति
 म ना ह नी ॥ लं क्षा र ग पु न नो र ति सा हा ॥ लं ति म न् ॥ न
 क्षा र ग न ग वी ॥ व न न न न लं से क ली र लं से न धू प द ली
 मा स य क्क प ति र य द ग य र ॥ य ध न ग क्क ति र द
 पु न ना द के ना ध द या र ॥ पु र्वा र ति क वि क न त त्या ॥
 पु र्वा र क य ति ॥ लं ड नो ग प ति र य ग म ग क्क ति ॥ री
 ग र स ति री क्षा क न ति स व न म त पु ति र न द दा ति ॥ य ध
 क न क व नी सा ध न ॥ लं क्षा क द व ति मे ध न वि य र ग क्क
 स्वा हा ॥ लं ति म न् ॥ व न र द क न त ग ली म र्ध मा र च दा प य

मि

विधि वत ५

की

इवाते ॥ पाचकं पतिवान् न दक्षति दिव्यकामिनी तां ज
नं ददाति ॥ अथ वदामि नीसाधनं ॥ १ ॥ श्री आग चू ग चू
पञ्चनिष्क हा ॥ स्वर्गहर्षे न न म ॥ २ ॥ स्वर्गानि न स्का
का न ये ॥ ३ ॥ स्वर्गहर्षे न न म ॥ ४ ॥ स्वर्गानि न स्का
का ॥ ५ ॥ स्वर्गहर्षे न न म ॥ ६ ॥ स्वर्गानि न स्का
समागच्छति ॥ आगता मा कामयिता या ॥ ७ ॥ स्वर्गहर्षे न न म
व कामजपदा तवति ॥ स्वर्गहर्षे न न म ॥ ८ ॥ स्वर्गानि न स्का
नतीसाधनं ॥ ९ ॥ स्वर्गहर्षे न न म ॥ १० ॥ स्वर्गानि न स्का
२ ॥ स्वर्गहर्षे न न म ॥ ११ ॥ स्वर्गानि न स्का

सहर्षं जपतु ॥ मातां न न नियतमायाति ॥ आगता सा तां
नी तोयति वति ॥ १ ॥ यदि माता तदा का नि कला जने ददाति ॥
वर्षं गन्धं सुवर्णं च ददाति ॥ २ ॥ यदि तानि नी तवति तदा या
जने न तानि मा नी य सम पयति ॥ ३ ॥ वस्त्रा त कानि तां जने द
दाति ॥ ४ ॥ यदि तानि नी तवति तदा दिव्य वस्त्रा वस्त्रा न लाय
ने ॥ ५ ॥ यदि तानि नी तवति तदा दिव्य वस्त्रा वस्त्रा न लाय

श्री श्री नमः सर्वदा हस्तु किं श्री पाइकां पूजयामि नमः ॥ वलिः ॥
 उम्मे नमः ॥ श्री श्री नित्य एतु फि मित्रः भक्तिः श्री पा० पू० ॥ व॥
 नमः ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥
 वरयथा ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥
 दयः ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥
 दयः ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥
 भक्तिः श्री पाइकां पूजयामि नमः ॥ वलिः ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥
 ॥ नमः ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥

इति श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥
 अथ लयांग पूजा ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥
 गमनः ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥
 ठि के श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥ श्री श्री नमः ॥
 लिपिः ॥ ॥







